© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 03 | January – March 2018

समकालीन कहानी व विभाजन का दर्द

डॉ. राकेश कुमारी (Lecturer in Hindi),GGSSS. Barwala Pkl. (Haryana)

सार :साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य में वही दिखाई पड़ता हैं जो समाज में घटित होता है। साहित्यकार अपनी रचनाओं में समाज में होने वाली प्रत्येक गतिविधि को अभिव्यक्त करता है। कहानी हिन्दी साहित्य की प्रमुख विद्या है जो समाज देश काल वातावरण आदि प्रत्येक पहलू को अपने में समेटे हुए है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में कहानी की अहम भूमिका हैं। हिन्दी के कहानीकारो ने समाज के प्रहरी की भूमिका अदा करते हुए सभी परिस्थितियो को अपनी कहानियों में सजगता से उकेरा है। हिन्दी कहानी अपने उद्भवकाल से ही समाज की किसी न किसी समस्या को उजागर करती रही है, चाहे वह किसानों की हो, या फिर समाज के किसी भी वर्ग की हो कहानी के प्रथम काल में कहानी के कथानक में आदर्शवाद का पुट अधिक था। धीर–धीरे कहानी की विषय वस्तु में परिवर्तन आया, जिसमें आदर्शवाद और यथार्यवाद का मिश्रण होने लगा। अब कहानी समाज के अधिक निकट आने लगी। कहानी में पुरानी परम्पराओं के साथ नई परम्पराओं का उदय हुआ।

ISSN : 2348-5612 © URR
9 770234 856124

परिचय : सन् 1950 में नई कहानी आंदोलन का प्रवर्तन हुआ जिसमें यथार्य अनुभव का चित्रण हुआ। नयी कहानी आधुनिक मानव के जीवन को विविध कोणों से देखकर उसका सही अर्थों में चित्रण करने का प्रयास करने लगी। नये कहानीकार ने अपनी कहानियों में आम आदमी के जीवन के विघटन का यथार्य चित्रण किया। आज़ादी के वर्षों में स्वतन्त्र भारत से बहुत सी अपेक्षाएँ जुड़ी हुई थी। सन् 1947 ई. में आज़ादी तो मिल गई परन्तु विभाजन का घाव दे गई। भारत के दो टुकड़े भारत और पाकिस्तान के रूप में हो गए। पूरे देश में दंगे भड़क गए। दंगो ने साम्प्रदायिक रूप ले लिया। सारे देश में हिंसा, लूटपाट, आगजनी मारकाट जैसी घटनाएँ होने लगी। सारा भारत देश विरोधी दंगों से जल रहा था, ऐसे समय में चाह कर भी कोई कुछ नहीं पर पा रहा था। लोग अपने घरों को छोड़कर जान बचाकर भाग रहें थे। बच्चें, महिलाएँ और बड़े बूढ़े सभी दंगों की चपेट में आए हुए थे।

विभाजन की सभी परिस्थितियों को समकालीन कहानीकारों ने अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है। विभाजन के दर्द को हिन्दी कथाकारों ने बड़ा मर्म स्पर्शी चित्रण किया है। कृष्णा सोबती, मोहन राकेश, अज्ञेय, विष्णु प्रभाकर, नासिरा शर्मा, कमलेश्वर, महीय सिंह, राजी सेठ, बिशन टंडन, भीष्म साहनी आदि अनेक हिन्दी कथाकारों ने अपनी कहानियो में विभाजन के दर्द का स्पष्ट चित्रण किया है। इन की कहानियों में विभाजन के दर्द का यथार्य वर्णन मिलता हैं।

लेखिका 'कृष्णा सोबती' की कहानी ''सिक्का बदल गया'' विभाजन की उस तस्वीर को स्पष्ट करती है जो कहानी की मुख्य पात्र शाहनी की मनः स्थिति का मार्मिक वर्णन करती है। भारत–पाक विभाजन से भारत की जमीन के टुकडे ही नहीं हुए बल्कि दिलों के भी टुकड़े हुए। जो लोग शाहनी से बहुत प्रेम आदर सम्मान करते थे, वे आज उसे अपना घर –गाँव छोड़ने को मजबूर करते है। राजपलट जाने से लोगों के व्यवहार में भी परिवर्तन आता है। ''शाहनी मन में मैल न लाना। कुछ कर सकते तो उठा न रखते। वकत ही ऐसा है। राजपलट गया है..... सिक्का बदल गया है.....इससे स्पष्ट होता है कि समय के साथ रिश्तो में भी बदलाव आता है। विभाजन के दर्द को शाहनी ने सहा और अपनी उम्रभर की कमायी प्रत्येक वस्तु का त्याग करना पड़ा। ''रात को शाहनी जब कैप में पहुंचकर जमीन पर पड़ी तो लेटे–लेटे आहत मन से सोचा राज पलट गया हैं..... सिक्का क्या बदलेगा? वह तो मैं वहीं छोड़ आयी।... और शाहनी की आँखे और भी गीली हो गयी। ''आस पास के हरे–हरे खेतों से घिरे गांवों में रात खून बरसा रही थी। शायद राज पलटा भी खा रहा था और सिक्का बदल रहा था''।

'मेरी माँ कहाँ ' कृष्णा सोबती की एक ऐसी कहानी है जो विभाजन के दर्द का स्पष्ट चित्रण करती है। इस कहानी में सोबती जी ने कहानी के प्रमुख पात्र यूनस खाँ के माध्यम से बटँवारें के दौरान हुए दंगे डर, आगजनी नफरत, घृणा, धार्मिक कट्टरता के साथ–साथ बेबसी, प्रेमभाव, करूणा आदि मनोभावों को भी उजागर किया है। यूनस खाँ हिन्दुओं से नफरत करता है। वह बजीरा बाद लाहौर में सैनिक ट्रक चलता है। विभजान के समय चारों तरफ आग में जलते बच्चे, औरत और मर्द देखता है। गाँव में लहलहाते खेतों के आस–पास लाशों के ढेर। कभी–कभी दूर से आती हुई 'अल्ला हो अकबर और 'हर–हर महादेव' की आवाजे। हाय, हाय.....पकड़ो पकड़ो.....मारो–मारो.....। यूनस खाँ सब सुन रहा है। बिलकुल चुपचाप। इससे कोई सरोकार नहीं उसे। वह तो देख रहा हैं अपनी आँखों से एक नई मुगलिया सल्तनत शानदार, पहले से कहीं ज्यादा बुलंद.....।''

घृणा के साथ–साथ यूनस खाँ का करूणा भाव भी स्पष्ट दिखाई देता हैं। घायल पड़ी बच्ची को देखकर द्रवित हो उठता हैं। बच्ची को उठाकर मेयो हॉस्पिटल ले जाता है। डॉक्टर से बच्ची को सलामत करने की गुहार लगाता है। ''सैनिक की क्रुरता नहीं, बल नहीं, अधीकर नहीं। उनके नीचे है एक असहाय भाव, एक विवशता वेबसी।''

विभाजन के कारण हुई हिसा से बच्ची में भरी नफरत, डर, घृणा आदि का भी इस कहानी में सुन्दर चित्रण हुआ है। बच्ची बलोच का हाथ पकड़ लेती हैं, 'खान मुझे मत मारना–मारना मत । उसका सफेद पड़ा चहेरा बता रहा है कि वह डर रही है। एकाएक लड़की नफरत से चीखने लगी, मेरी माँ कहाँ है। मेरे भाई कहाँ है? मेरी बहिन कहाँ है?

'मोहन राकेश' की कहानी 'मलवे का मालिक' विभाजन पर आधारित है। इस कहानी के मुख्य चरित्र 'गनी मियां' को भारत–पाक विभाजन के कारण अमृतसर में अपना घर परिवार छोड़कर पाकिस्तान जाना पड़ा। उसके बेटे को मोहल्ले के लोगों ने 'पाकिस्तान' दे दिया अर्थात् मौत के घाट उतार दिया। गनी मियां का घर मलबे में तब्दील हो चुका है। साढ़े सात साल के बाद गनी मियां लाहौर से अमृतसर हॉकी का मैच देखने के बहाने आता है। वह देखता है कि सारे मुसलमानों के घर जल गए। ''बाज़ार बाँसा अमतृसर का एक उजड़ा सा बाज़ार है, जहाँ विभाजन से पहले ज़्यादातर निचले तबके के मुसलमान रहते थे। वहाँ ज़्यादातर बाँसा और शहतीरों की ही दुकाने थी जो सब की सब एक ही आग में जल गयी थी।'' बाज़ार में उसदिन भी चहल–पहल नहीं थी क्योंकि उस बाज़ार के रहने वाले ज़्यादातर लोग तो अपने मकानो के साथ ही शहीद हो गये थे, और जो बचकर चले गये थे, उनमें से शायद किसी में भी लौटकर आने की हिम्मत नहीं रहती थी।

गनी मियां अपनी गली से मकान को देखता तो उसे विश्वास नहीं होता ''वहाँ था तुम्हारा मकान मनोरी ने दूर से एक मलबे की तरफ इशारा किया। गनी पल–भर ठिठककर फटी–फटी आँखों से उस तरफ देखता रहा। चिराग़ और उसके बीवी–बच्चों की मौत को वह काफी पहले स्वीकार कर चुका था। मगर अपने नये मकान को इस शक्ल में देखकर उसे जो झुरझुरी हुई, उसके लिए वह तैयार नहीं था। गनी छड़ी के सहारे चलता हुआ किसी तरह मलबे के पास पहुँच गया।'' मकान को इस हालत में देखकर गनी मियां ''क्षण–भर बाद उसका सिर भी चौखट से जा सटा और उसके मुँह से बिलखने की–सी आवाज निकली ''हाथ ओए चिराग़दीना''। गनी मियां का परिवार ही नहीं निर्जीव मकाम बटबारे की भेट चढ़ जाता है।

'शरणदाता' अज्ञेय की एक ऐसी कहानी हैं जो विभाजन के दर्द को अपने में समेटे हुए है। कहानी का पात्र देविन्दरलाल बटवारे से पहले पाकिस्तान में रहता है। विभाजन से फैले दंगों, हिन्दू मुसलमानों के बीच घृणा द्वेष के कारण जब वह अपना घर छोड़कर भारत आता हैं तो रफीकुद्दीन उसे रोक लेता है। तनाव, उन्माद व घृणा के घनघोर आंतक के बीच देंविन्दरलाल उसके मकान में एक सूने कोने में शरण लिए हुए है। देविन्दरलाल के घर को लूट लिया जाता है। चारों तरफ मार–काट, लूट पाट व घर जलाए जा रहे थे ''शहर तो बीरान हो गया था। जहाँ तहाँ लाशें सड़ने लगी, घर लूट चुके थे और अब जल रहे थे।'' ''बिषाक्त वातावरण, द्वेष और घृणा की चाबुक से तड़फडाते हुए हिंसा के घोड़े विष फैलाने को

सम्प्रदायों के अपने संगठन और उसे भड़काने को पुलिस और नौकरशाही। ''जब देविन्दर लाल को रफीकुद्दीन अपने दोस्त के घर पनाह दिलाते हैं तो उसे वहाँ ज़हर देकर मारने की कोशिश की परन्तु वह मरता नहीं है। वह दीवार फांद के अपनी जान बचाता है। इस प्रकार इस कहानी में घृणा, द्वेष, आंतक, भय और सम्प्रदायिकता को स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है।

'भीष्म सहानी' की कहानी 'अमृतसर आ गया है' में विभाजन के कारण उत्पन्न विरोधी भावना द्वेष, अलगाव, आगजनी, धार्मिक कट्टरता, लाचारी आदि को अभिव्यक्त करती है। आजादी से एक तरफ लोगों में खुशी की लहर दौड़ रही थी वही दूसरी तरफ भारत पाक विभाजन से लोगों के मन खिन्न थे। सबकों यह चिंता हो रही थी कि कौन कहाँ जाऐगा। ''कुछ लोग अपना घर छोड़कर जा रहे थे, जबकि अन्य लोग उनका मजाक उड़ा रहे थें। कोई नहीं जानता था कि कौन सा कदम ठीक होगा और कौन–सा गलत।'' ''जगह जगह दंगे भी हो रहे थे, और योम–ए–आजादी की तैयारियाँ भी चल रही थी।''

रेलगाड़ी में मुसाफिर एक–दूसरे का विरोध कर रहे थे। सम्प्रदायिकता के कारण मुसाफिरों को गाड़ी में चढ़ने नहीं दिया जाता। गाड़ी छूट जाती है शहर में आगजनी व दंगों के कारण कई प्लेटफार्म सूने पड़े है। भय के कारण कहानी का पात्र बाबू पठानों के द्वारा किए गए अत्याचारों व दुर्व्यवहार को सहन करता है। जब बाबू को पता लगता है कि अमृतसर आ गया वह पठानों को मारने के लिए आतुर हो जाता है, वह मुस्लिम मुसाफिरों को रेलगाड़ी चढ़ने नहीं देता और उन्हें मार देता है। इस प्रकार इस कहानी में बंटवारे के कारण बढ़ी बदले की आश, लाचारी व घृणा का स्पष्ट वर्णन मिलता है।

'बिशन टंडन' की 'माटी रही पुकार' कहानी ऐसी है जो साम्प्रदायिकता व बैमनस्य को ही देश के बंटवारे का अहम कारण दर्शाती है। कहानी की नारी पात्र सकीना का एक तर्क था कि ''साम्प्रदायिकता के तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता। देश का बंटवारा साम्प्रदायिकता के आधार पर हुआ है।'' वह विभाजन के बाद मुस्लमानों को हिन्दुस्तान में असहाय, बेसहारा करार देती है। इस कहानी में अपनों के बिछुड़ने के दर्द की भी अभिव्यक्ति हुई है। बशीर अहमद ज़िदगी भर अपनों से अलग होकर दुःखी रहे। अपनों से अलग होने का दर्द उसे हमेशा सताता रहता है। उसको मारने के बाद अपने देश की माटी में ही दफन होने की इच्छा है।

इस कहानी में मुस्लिम राजनेताओं के द्वारा मुसलमान अधिकारियों को भावुकता और भविष्य के तर्को द्वारा पाकिस्तान चलने की अपील को दर्शाया गया है। मुसलमानों को भारत में असुरक्षित बताकर हिन्दुओं के विरुद्ध उकसाया गया है इस प्रकार इस कहानी में विभाजन की एक नई तस्वीर को उजागर किया गया है और लोगों के दिलों में भेदभाव का बीज बोया गया।

निष्कर्ष : समकालीन हिन्दी कहानियों में विभाजन के दर्द का स्पष्ट चित्रण किया है। समकालीन हिन्दी में साम्प्रदायिकता के सभी रूप दिखाई पड़ते है। हिन्दी लेखकों ने अपनी कहानियों में बटवारे में टूटते मानवीय मूल्यों और संवेदना के धरातल पर उजागर किया गया। भारत–पाक विभाजन 20वीं शदी की सबसे बड़ी त्रासदी थी। हिन्दी कहानियों में विभाजन के बाद उत्पन्न प्रत्येक परिस्थिति का बड़ी सहजता से चित्रण हुआ है। इन सभी कहानियों में हिंसा दंगो, भय का सामाजिक स्तर पर विस्तार हुआ है। हिन्दी कथाकारों ने विभाजन के दर्द को बड़ी बैचनी से अभिव्यक्त किया है।

सन्दर्भ सूची :

1. नयी कहानी की भूमिका : राजकमल प्रकाशन
2. भारतीयता और समकालीन हिन्दी कहानी : hindisamay.com
3. नयी कहानी समय संपादक : पुष्पपाल सिंह, पृष्ठ 94, 96
4. मेरी माँ कहाँ : कृष्णा सोबती : hindisamay.com
5. मोहन राकेश संचयन संपादक रवींद्र कालिया।
6. शरणदाता : अज्ञेय : हिन्दी समय डॉट कॉम
7. माटी रही पुकार : बिशन टंडन हिन्दी समय डॉट कॉम